

পঞ্চ দবেতার পূজা

বৈদিক স্মার্ত সম্প্রদায়ের পূজা-উপাসনার একটি অবচ্ছদ্য অঙ্গ হইল পঞ্চদবেতা পূজা।

কথিত আছে, খ্রিস্টীয় অষ্টম শতাব্দীতে বৈদান্তিক ধর্মসংস্কারক আদিশঙ্কর এই বিশিষে পূজার প্রবর্তন করিয়াছিলেন। গণেশ, শবি, সূর্য, বষ্ণু ও দুর্গা — এই পঞ্চ দবেদবীর পূজাকেই বলা হয় পঞ্চদবেতা পূজা বা পঞ্চায়াতন পূজা। এই পঞ্চদবেদবী হিন্দুদের পঞ্চ সম্প্রদায়ের প্রধান দবেতা। বৈদিক দার্শনিক তত্ত্বের বিচারে, ইহারা কেহই পৃথক দবেতা নহনে, বরং একই সগুণ ব্রহ্মের পাঁচটি পৃথক রূপমাত্র। সম্প্রদায়ভেদে ইহাদের একজন পূজকের ইষ্টদবেতা। তাঁহাকে কেন্দ্ররে রাখিয়া পূজক পঞ্চদবেতাকেই পূজা করনে — একং সৎ বপ্ৰাঃ বহুধা বদন্তি — এই ঋক্মন্ত্রের অনুধ্যানো বলাবাহুল্য, বঙ্গদেশের বৈদিক স্মার্ত সম্প্রদায়ে পঞ্চদবেতার পূজা বহুল প্রচলতি। বঙ্গীয় পূজক ও সাধকবর্গের সুবধিার্থে এখানো তাই শ্রীগুরু ও পঞ্চদবেতা পূজার পদ্ধতি বর্ণিত হইল। যাঁহারা পঞ্চদবেতার সহতি শ্রীশ্রীবাণেশ্বর শবিলিঙ, শ্রীশ্রীনারায়ণ শলা ও শ্রীশ্রীগোবর্ধন শলির পূজা করনে, তাঁহাদের সুবধিার্থে উক্ত পূজার পদ্ধতিও বর্ণিত হইল। সেই সঙগে শ্রীরামকৃষ্ণ-ভক্তমণ্ডলীর সুবধিার্থে শ্রীশ্রীঠাকুরের দশোপচার পূজার পদ্ধতিও বর্ণিত হইল।

সংক্ষিপ্ত বধি

- ঐ এতে গন্ধপুষ্পে শ্রীগুরবে নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে গণেশায় নমঃ।
ওঁ নমঃ শবায় এতে গন্ধপুষ্পে শবায় নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে শ্রীসূর্যায় নমঃ।
ওঁ নমো নারায়ণায় এতে গন্ধপুষ্পে নারায়ণায় নমঃ।
ওঁ হরী এতে গন্ধপুষ্পে জয়দুর্গায়ৈ নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে আদিত্যাদিনবগ্রহভেযো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে ইন্দ্রাদিদশদিকিপালভেযো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে কাল্যাদিদশমহাবদিযাভো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে মৎস্যাদিদশাবতারভেযো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে সর্বভেযো দবেভেযো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে সর্বাভ্যো দবেভ্যো নমঃ।

(এই প্রকারে পূজা করিয়া ঐবাণেশ্বর শবিপূজা, ঐনারায়ণ পূজা, ঐগোবর্ধন পূজা ও শ্রীশ্রীঠাকুরের পূজা করতি হইবে। বধি 'বস্তিতারতি বধি' পরচ্ছদে দেওয়া হইল। উল্লেখ্য, গণেশোদি পঞ্চদবেতার পঞ্চোপচার পূজা করতি হইলে ঐনারায়ণ শলির স্নান ও পূজা সেই সময় করতি হইবে। নতুবা ঐবাণেশ্বর শবিরে পূজার পর ঐনারায়ণ শলির স্নান ও পূজা হইবে।)

বসিতারতি বধি

শ্ৰীগুরুপূজা

ধ্যান

কূৰ্মমুদ্রায় হস্তে সচন্দন পুষ্প লইয়া ধ্যান করবি

ওঁ ব্রহ্মানন্দং পরমসুখদং কবেলং জ্ঞানমূর্তিং

দ্বন্দ্বাতীতং গগনসদৃশং তত্বমস্যাৎ লক্ষ্যম্।

একং নতিং বমিলমচলং সর্বধীসাক্ষীভূতং

ভাবাতীতং ত্রিগুণহতিং সদগুরুং তং নমামি।

এই প্রকারে ধ্যান করিয়া হস্তস্থ পুষ্প সম্মুখে তাম্রপাত্রস্থ জলে বা ৩বাণেশ্বর শবিরে উপর স্থাপন করিয়া শ্ৰীগুরুর সাক্ষাৎ উপস্থিতি চিন্তা করিয়া পূজা করবি

পূজা

ওঁ এষ গন্ধঃ শ্ৰীগুরবে নমঃ।

ওঁ ইদং সচন্দনপুষ্পং শ্ৰীগুরবে নমঃ।

ওঁ ইদং সচন্দনবল্লিপত্রং শ্ৰীগুরবে নমঃ।

ওঁ এষ ধূপঃ শ্ৰীগুরবে নমঃ।

ওঁ এষ দীপঃ শ্ৰীগুরবে নমঃ।

ওঁ ইদং নবৈদ্যং শ্ৰীগুরবে নমঃ।

প্রণাম

ওঁ অখণ্ডমণ্ডলাকারং ব্যাপ্তং যনে চরাচরম্।

তৎপদং দর্শতিং যনে তস্মৈ শ্ৰীগুরবে নমঃ।।

৩গণেশপূজা

ধ্যান

কূৰ্মমুদ্রায় রক্তপুষ্প লইয়া পূর্ববৎ ধ্যান করবি

ওঁ খর্বং স্থূলতনুং গজেন্দ্রবদনং লম্বোদরং সুন্দরং

প্রস্বন্দনমদগন্ধলুব্ধমধুপব্যালোলগণ্ডস্থলম্।

দন্তাঘাতবদারতিরস্মিধরিঃ সিন্দূরশোভাকরং

বন্দে শৈলসূতাসুতং গণপতিং সদ্ধিপ্রদং কামদম্।।

পূজা

গং এষ গন্ধঃ গণেশায় নমঃ।

গং ইদং সচন্দনপুষ্পং গণেশায় নমঃ।

গং এষ ধূপঃ গণেশায় নমঃ।

গং এষ দীপঃ গণেশায় নমঃ।

গং ইদং নবৈদ্যং গণেশায় নমঃ।

প্রণাম

ওঁ দবেন্দ্রমৌলিন্দারমকরন্দকণারুণাঃ।

বহ্নিং হরন্তু হরম্ভবচরণাম্বুজরণেবঃ।।

একদন্তং মহাকায়ং লম্বোদরং গজাননম্।

বহ্নিনাশকরং দবেং হরম্ভবং প্রণামাম্যহম্।।

৩শবিপূজা

ध्यान□

कूरुममुद्राय पुष्प लइया पुरववङ ध्यान करविणे□

ॐ ध्यायनेनतिथ्यं महशेयं रजतगरिनिभिं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतहिस्रतं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तां स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तं वसानं
वश्विवादयं वश्विवीजं नखिलिभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रनितेरम्॥

स्नान□

ध्यानान्ते नमिनोक्त मन्त्रे घण्टा बाजाइते बाजाइते स्नान कराइवणे□

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिविर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माहमृताम्॥

ॐ तत्पुरुषाय बद्धिमहे महादवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॐ॥

पूजा□

ॐ नमः शबिय एष गन्धः शबिय नमः।

ॐ नमः शबिय इदं सचन्दनपुष्पं शबिय नमः।

ॐ नमः शबिय इदं सचन्दनबलिवपत्रं शबिय नमः।

ॐ नमः शबिय एष धूपः शबिय नमः।

ॐ नमः शबिय एष दीपः शबिय नमः।

ॐ नमः शबिय इदं नवैदेयं शबिय नमः।

अष्टमूर्ति पूजा□

ॐ एते गन्धपुष्पे अष्टमूर्तिभ्यो नमः।

प्रणाम□

ॐ नमः शबिय शान्ताय कारणत्रयहतेवते।

नविदेयामि चात्मानं गतस्त्वं परमशे्वर॥

७सूर्यपूजा

ध्यान□

कूरुममुद्राय रक्तपुष्प लइया पुरववङ ध्यान करविणे□

ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणकैसिन्धुं

भानुं समस्तजगतामधिपिं भजामि

पद्मद्वयाभयवरान् दधतं कराव्जटै-

र्माणकियमौलमिरुगाङ्गरुचिं त्रनितेरम्॥

पूजा□

ॐ एष गन्धः श्रीसूर्याय नमः।

ॐ इदं सचन्दनपुष्पं श्रीसूर्याय नमः।

ॐ एष धूपः श्रीसूर्याय नमः।

ॐ एष दीपः श्रीसूर्याय नमः।

ॐ इदं नवैदेयं श्रीसूर्याय नमः।

प्रणाम□

ॐ जवाकूसुमसङ्काशं काश्यपयेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

७नारायणपूजा

ध्यान□

कूर्ममुद्राय पुष्प लईया पूर्ववत् ध्यान करविणे□

ॐ ध्येः सदा सबतिमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसजिसनसन्निविष्टः।

कयूरवान् कनककुण्डलवान् करिणीहारी हरिण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

स्नान□

ध्यानान्ते नमिन्कोक्त मन्त्रे घण्टा बाजाइते बाजाइते स्नान करीवणे□

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्ष सहस्रपां।

स भूमिं सर्वतः स्पृत्वा अत्यत्तश्चिद्दशाङ्गुलाम्॥

ॐ नारायणाय बदिमहे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयां ॐ॥

स्नानान्ते 'ॐ नमस्ते बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने स्वाहा' मन्त्रे दुईटि

तुलसीपत्र ७ नारायणरे उपरे ७ नीचे दबिने।

पूजा□

ॐ नमो नारायणाय एष गन्धः नारायणाय नमः।

ॐ नमो नारायणाय इदं सचन्दनपुष्पं नारायणाय नमः।

ॐ नमो नारायणाय इदं सचन्दनतुलसीपत्रं ॐ नमस्ते बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने
स्वाहा नारायणाय नमः।

ॐ नमो नारायणाय एष धूपः नारायणाय नमः।

ॐ नमो नारायणाय एष दीपः नारायणाय नमः।

ॐ नमो नारायणाय इदं नवैदेयं नारायणाय नमः।

प्रणाम□

ॐ त्रैलोक्यपूजतिः श्रीमान् सदावजियवर्धनः।

शान्तिं कुरु गदापाणे नारायण नमोहस्तु तः॥

७ जयदुर्गापूजा

ध्यान□

कूर्ममुद्राय रक्तपुष्प लईया पूर्ववत् ध्यान करविणे□

ॐ ह्रीं कालाभ्राभां कटाक्षरैरकुलभयदां मालविद्धन्दुरथोः

शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखिमपि करैरुद्वयहन्तीं त्रनितैराम्।

सिंहस्कन्धाधरिद्रां त्रिभुवनमखलिं तजसा पुरयन्तीं

ध्यायद्दुर्गां जयाख्यां त्रिदिशपरिवितां सवेतिं सद्धिकामैः॥

पूजा□

ॐ ह्रीं एष गन्धः जयदुर्गायै नमः।

ॐ ह्रीं इदं सचन्दनपुष्पं जयदुर्गायै नमः।

ॐ ह्रीं इदं सचन्दनपुबलिवपत्रं जयदुर्गायै नमः।

ॐ ह्रीं एष धूपः जयदुर्गायै नमः।

ॐ ह्रीं एष दीपः जयदुर्गायै नमः।

ॐ ह्रीं इदं नवैदेयं जयदुर्गायै नमः।

प्रणाम□

ॐ सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शबिे सर्वाथसाधकिे।

शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणं नमोहस्तु तः॥

७ बाणेश्वर शबिपूजा

ध्यान□

कूर्ममुद्राय पुष्प लईया पूर्ववत् ध्यान करविणे□

ॐ प्रमत्तं शक्तसिंयुक्तं बाणाख्यञ्च महाप्रभम्।

कामबाणान्बतिं दवेत् संसारदहनक्षमम्॥

शृङ्गारादरिसोल्लासं बाणाख्यं परमशे्वरम्।

एवं ध्यात्वा बाणलङ्गिणं यजतेत्तं परमं शिवम्॥

स्नान□

ध्यानान्तं नमिन्कोक्त मन्त्रे घण्टा बाजाइते बाजाइते स्नान करीइवे□

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिविर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माहमृताम्॥

पूजा□

ॐ एष गन्धः बाणशे्वरशिवाय नमः।

ॐ इदं सचन्दनपुष्पं बाणशे्वरशिवाय नमः।

ॐ इदं सचन्दनबल्लिपत्रं बाणशे्वरशिवाय नमः।

ॐ एष धूपः बाणशे्वरशिवाय नमः।

ॐ एष दीपः बाणशे्वरशिवाय नमः।

ॐ इदं नैवेद्यं बाणशे्वरशिवाय नमः।

गौरीपूजा□

ॐ ह्रीं एते गन्धपुष्पे गौर्यै नमः।

प्रणाम□

ॐ बाणशे्वराय नरकारणवतारणाय ज्ञानप्रदाय करुणामयसागराय।

करपूरकुन्दधवलनेन्दुजटाधराय दारदिरदुःखदहनाय नमः शिवाय॥

७गोवर्धनपूजा

ध्यान□

कूर्ममुद्राय पुष्प लईया पूर्ववत् ध्यान करविणे□

ॐ बन्दे बन्दावनगुरुं कृष्णं कमललोचनम्।

पीताम्बरं घनश्यामं वनमालावड्ढिषतिम्॥

श्रीदामदामसुवलस्तोककृष्णार्जुनावृतम्।

गोपीमण्डलमध्यस्थं राधिकाप्राणवल्लभम्॥

स्नान□

ध्यानान्तं नमिन्कोक्त मन्त्रे घण्टा बाजाइते बाजाइते स्नान करीइवे□

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्ररक्ष सहस्रपात्।

स भूमिं सर्वतः स्पृत्वा अत्यत्तश्चिठदशाङ्गुलाम्॥

ॐ तंपुरुषाय वदिमहे महादवोय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॐ॥

स्नानान्तं 'ॐ नमस्ते बहुरूपाय वशिषवे परमात्मने स्वाहा' मन्त्रे दुईटि

तुलसीपत्र ७गोवर्धनरे उपरे ७ नीचे दबिने।

पूजा□

ॐ एष गन्धः श्रीकृष्णाय नमः।

ॐ इदं सचन्दनपुष्पं श्रीकृष्णाय नमः।

ॐ इदं सचन्दनतुलसीपत्रं ॐ नमस्ते बहुरूपाय वशिषवे परमात्मने स्वाहा

শ্ৰীকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ এষ ধূপঃ শ্ৰীকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ এষ দীপঃ শ্ৰীকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ইদং নবৈদ্যেয়ং শ্ৰীকৃষ্ণায় নমঃ।

শ্ৰীরাধিকাপূজা□

ওঁ এতং গন্ধপুষ্পে শ্ৰীরাধিকায়ৈ নমঃ।

প্ৰণাম□

ওঁ কৃষ্ণায় বাসুদবোয় হরয়ে পরমাত্মনো।

প্ৰণতক্লেশনাশায় গোবিন্দায় নমো নমঃ।।

শ্ৰীশ্ৰীঠাকুরের পূজা

ধ্যান□

ওঁ হৃদয়কমলমধ্যে রাজতিং নৰিবকিল্পং

সদসদখলিভদৌতীতমকেস্বরূপম্।

প্ৰকৃতবিকৃতিশূন্যং নতিযমানন্দমূর্ততিং

বমিলপরমহংসং রামকৃষ্ণং ভজামঃ।।

নরুপমমতসিকৃষ্ণং নষিপ্ৰপঞ্চং নরীহং

গগনসদৃশমীশং সর্বভূতাধিবাসম্।

ত্ৰপুণহতিসচ্চদিব্ৰহ্মরূপং বরণেযং

বমিলপরমহংসং রামকৃষ্ণং ভজামঃ।।

বতিরতিমবতীর্গং জ্ঞানভক্তপ্ৰশান্তীঃ

প্ৰণয়গলতিচতিতং জীবদুঃখাসহষ্ণুম্।

ধৃতসহজসমাধিং চন্নিময়ং কামলাঙ্গং

বমিলপরমহংসং রামকৃষ্ণং ভজামঃ।।

পূজা□

ওঁ ঙ্ৰে এতং পাদ্যং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে এষঃ অর্ঘ্যঃ সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদমাচমনীয়ং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদং স্নানীয়ং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে এষ গন্ধঃ সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদং সচন্দনপুষ্পং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদং সচন্দনবল্লিপত্রং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদং সচন্দনতুলসীপত্রং ওঁ নমস্তে বহুরূপায় বষ্ণবো পরমাত্মনো স্বাহা
সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে এষ ধূপঃ সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে এষ দীপঃ সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদং সোপকরণবৈদ্যেয়ং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদং পানার্থোদকং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে ইদং তাম্বুলং সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায় নমঃ।

ওঁ ঙ্ৰে এষ সচন্দনপুষ্পবল্লিপত্রাঞ্জলিঃ সর্বদবেদবৌস্বরূপায় শ্ৰীরামকৃষ্ণায়
নমঃ।

আবরণপূজা□

ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে শ্ৰীৰামকৃষ্ণষড়্‌গদবেতাভ্যো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে সৰ্বদবেদবীস্বৰূপিণ্যৈ শ্ৰীসারদাদেব্যৈ নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে বিবিকোনন্দাদি-ৰামকৃষ্ণ-পাৰ্শ্বদেব্যো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে শ্ৰীৰামকৃষ্ণাবরণদবেতাভ্যো নমঃ।

প্ৰণাম□

ওঁ স্থাপকায় চ ধৰ্মস্য সৰ্বধৰ্মস্বৰূপিণে।
অবতারবৰিষ্ঠায় ৰামকৃষ্ণায় তে নমঃ।।
ওঁ যথাগ্নরেদাহকিশক্‌তিঃ শ্ৰীৰামকৃষ্ণে স্থতি হি যা।
সৰ্ববদিয়াস্বৰূপাং তাং সারদাং প্ৰণমাম্যহম্।।
ওঁ পরতত্ত্বে সদালীনো ৰামকৃষ্ণসমজ্ঞয়া।
যো ধৰ্মসংস্থাপনরতো বীরশেং তং নমাম্যহম্।।

অন্যান্য দেবদেবীৰ পূজা□

ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে আদিত্যাদি-নবগ্রহদেব্যো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে ইন্দ্ৰাদি-দশদিক্‌পালদেব্যো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে কাল্যাদি-দশমহাবদিয়াভ্যো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে মৎস্যাদি-দশাবতারদেব্যো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে সৰ্বদেব্যো দেবেদেব্যো নমঃ।
ওঁ এতে গন্ধপুষ্পে সৰ্বদেব্যো দেবেদেব্যো নমঃ।

